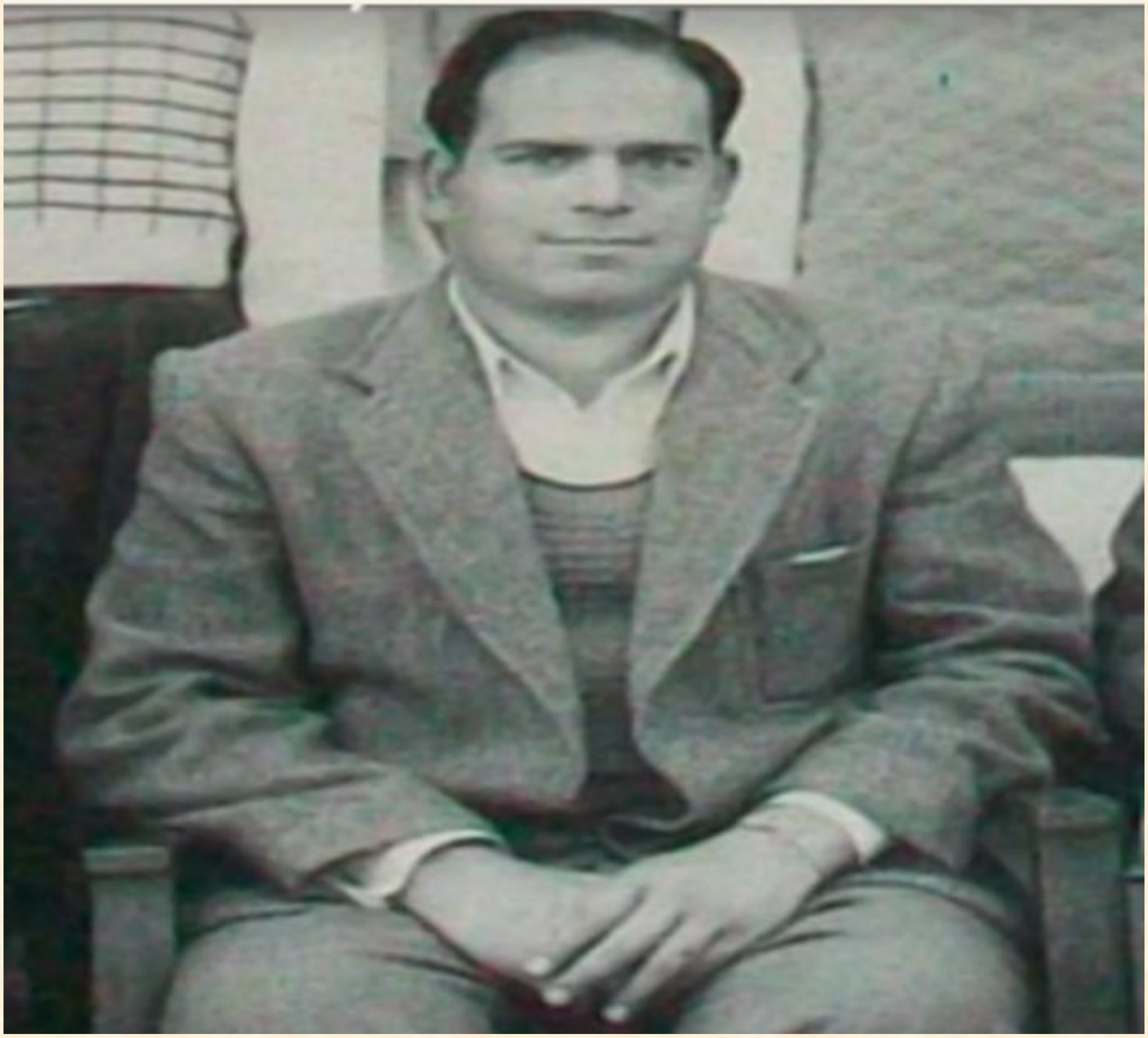
पिताजी की पुस्तक की साथिओं ने भी सराहना की





1.वंदना बहिन जी :

चरण स्पर्श भईया जी🙏🙏 आपने अपने पिताजी को श्रद्धांजलि देने हेतु जो लघु पुस्तिका लिखी और प्रकाशित किया, पढ़कर बहुत अच्छा लगा।मुझे अपने पिताजी की याद आ गई। मेरे पिताजी भी वैसे ही थे और गर्व है मुझे अपने पिताजी पर, मेरी प्रेरणा के स्रोत हैं। उस लेख के लिए उस दिन तो कमेंट नहीं कर पाई थी लेकिन बाद में दूसरे लेख में अलग से कमेंट की थी शायद आप नहीं देख पाए। इसमें गलती मेरी ही है जो लेट से कमेंट की और वो भी दूसरे लेख में । क्षमा प्रार्थी हूँ। वो कमेंट इस प्रकार था:

आदरणीय त्रिखा भईया जी सादर प्रणाम🙏🙏 आज मैं आपके दिवंगत पिताजी का पूरा लेख पढ़ी जो कि 4 दिन पहले प्रकाशित की गई थी। पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपके पिताजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। आप और आपकी पूरी जनरेशन बहुत सौभाग्यशाली हैं। आपने इस प्रकार जो पितृपक्ष में अपने पिताजी को श्रद्धांजलि प्रदान

करी है एक मिसाल कायम किया है पिता पुत्र के संबंध का। आज के जमाने में अपने माता पिता को कोई पूछता नहीं और आपने तो अपने दिवंगत पिता पर पूरी पुस्तक ही लिख डाली, वो हमेशा के लिए अमर हो गए। बहुत सुंदर👌👌🙏🙏

आज आपने मेरे प्रेजेंटेशन के बारे में पूछा, वो कोई खास नहीं था लेकिन उसका मकसद बहुत खास था। उन दिनों मेरी नाइट शिफ्ट (अमेरिकन) थी मैं ट्रेनिंग पीरियड में थी। ट्रेनिंग देने के लिए विदेशी ट्रेनर भी आते थे और बाद में यहीं के लोग भी ट्रेनिंग देने लग गए। फिर गुरुदेव की कृपा से एक ऐसा टाइम आया जब मैं ही ट्रेनर,क्वालिटी एडिटर,सीनियर quality कोच, meeting organiser, floor support etc सारे काम एकसाथ करने लग गई। तो बात यहां प्रेजेंटेशन की हो रही थी और मैं अपनी ही तारीफ करने लग गई।(इसीलिए डरती हूं कि अपनी मुंह मियां मिट्ठू न बन जाऊं। लेकिन बताऊंगी नहीं तो गुरुदेव की महिमा का पता कैसे चलेगा। सब काम तो वही करवाते थे

क्योंकि फ्री टाइम में मानसिक जाप, गायत्री चालीसा चलता रहता था।)

प्रेजेंटेशन में कोई एक टॉपिक चुनना था, स्लाइड बनाना था और उसको सभी बड़े लोगों के सामने इंग्लिश में बोलकर प्रेजेंट करना था। बाकी लोग भी मेरी तरह ही ट्रेनिंग में थे और प्रेजेंटेशन देने टाइम घबरा रहे थे। जब मेरा टाइम आया तो मैं भी अंदर से घबरा गई पर जाहिर नहीं होने दिया और नॉर्मल फेस लेकर प्रेजेंटेशन दिया। बाद में मेरे प्रेजेंटेशन की बड़ी तारीफ हुई क्यूंकि उस टाइम मेरा बॉडी लैंगुएज परफेक्ट था। Event trainer ने भी तारीफ की कि कब कहां खड़ा होना था, कहां क्या प्वाइंट करना था, कहां साइड में चले जाना था, कहां smile देना था कहां नॉर्मल रहना था, सब कुछ परफेक्ट था।

तो यहां ये बताना चाहती हूं कि ये सब ट्रेनिंग का एक पार्ट होता है ताकि employee का झिझक मिटे, भीड़ में भी बोलने की क्षमता रखे , इंग्लिश लैंगुएज सुधरे, etc। इसके अलावा और भी बहुत सारी trainings हुई और हर ट्रेनिंग का अलग ही किस्सा है। कुल मिलाकर यही कहना चाहूंगी

कि बहुत कुछ नया सीखने को मिला और सीखने की क्षमता गुरुदेव ने, गायत्री माता ने दी। हर दिन प्राणायाम करके ऑफिस जाती थी ताकि दिमाग खुला रहे और नाइट शिफ्ट में प्रॉब्लेम नहीं आए।



2.अरुण वर्मा जी :

आज ऐसे पिता का संस्मरण पढ़ने को मिला है, जो पिता के साथ-साथ एक बहुत ही तेजस्वी गुरु भी हैं , जिनका मार्गदर्शन हमारे मार्गदर्शक अरुण भैया जी को सतत् मिलता रहा,इतने सरल और न्यायप्रिय जिन्होंने अपने कर्तव्य को सब से आगे रखा, जिससे उनकी निष्ठा पर किसी भी तरह की कोई आंच न आए, इसके लिए वो हमेशा अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहते थे,अपने असूलों को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने हमारे मार्गदर्शक अरुण भैया जी एवं उनके भाई बहनों को स्कूल के प्रांगण में चक्कर लगवाए, बच्चों को कभी यह एहसास नहीं होने दिये कि तुम एक प्रधानाध्यापक के बच्चे हो, सभी बच्चों को उन्होंने ट्यूशन पढ़ाया, अपने बच्चों को शामिल नहीं होने

दिया लेकिन हमारे मार्गदर्शक भी कम होनहार नहीं हैं, उन्होंने पूरी लगन और निष्ठा के साथ ईमानदारी से पढ़ाई की और क्लास 9 के कक्षा में रहते हुए क्लास 10 का सिलेबस पूरा कर लिया था, इसको जूनून ही कह सकते हैं। अपने माता-पिता के जो संस्कार उन्होंने बचपन में सीखे ,वह अत्यंत अनुकरणीय है।

भैया जी आपके पिताजी का अनमोल धरोहर उपहार आपके पास है, आपके परिवार में पिताजी का संस्कार कूट कूट कर भरा हुआ है,आज आपके बच्चे भी उतना ही संस्कारी हैं और पोती तो आपकी चहेता बनी हुई है। संस्कार ही एक ऐसा अनमोल धरोहर है जो पीढ़ी दर पीढ़ी उपहार के रूप में बिना बताये अपनेआप ही फलित होता चला जाता है।

हमारा तो ऐसा सौभाग्य बिल्कुल भी नहीं रहा, बल्कि ठीक इसका उल्टा रहा। यह तो हमारे धर्म पत्नी की कृपा रही कि गायत्री परिवार से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और एक ऐसे गुरु का संरक्षण मिला जिसने हमारा जीवन ही बदल गया, और सबसे मजे की बात तो यह है कि हमें गुरु भी

मिल गया, परिवार भी मिल गया,परिवार का सही संचालन करने वाले एक आदर्श गुरुभाई भी मिले जिन्होंने हर समय सही मार्गदर्शन दिया। मैं ज्यादा कुछ नहीं लिख सकता क्योंकि लिखने से ज्यादा मनन करना अति महत्वपूर्ण है,



3.मृदुला श्रीवास्तव जी :

भैयाजी सादर प्रणाम, आज मैंने पूरा संस्मरण पढ़ा, आदरणीय पिताजी का अनुशासन, लगन और कर्मठ स्वभाव दिल को छू गया। आज हम सभी बच्चों को ढील दे देते हैं और मेहनत करने से वंचित कर देते हैं, परिणाम स्वरूप बच्चे थोड़ा सा भी कष्ट आने पर घबरा जाते हैं और ऊँचाई तक पहुँचने का रास्ता नहीं खोज पाते। ऐसे व्यक्तित्व वाले मनुष्य आज विरले ही मिलेगें। आपको मेरा सादर नमन, अभिनंदन और शत शत प्रणाम है🙏

बहुत ही प्रेरणा मिली है मुझे और मुझे लगता है कि बहुत लोग लाभांवित होंगे, इस पुस्तिका में वर्णित संस्मरणों को हम भी फॉलो कर सकें तो भी अपने को धन्य समझेंगे

जय गुरुदेव🙏🙏

4.सुमनलता जी :



परमपूज्य पिता श्री के अविस्मरणीय संस्मरणों की श्रद्धांजलि स्वरूप उपरोक्त पुस्तिका का प्रकाशन संभवतः आपके द्वारा यूट्यूब पर पोस्ट नहीं किया है , अतः हम व्हाट्स एप पर ही मैसेज कर रहे हैं। इन श्राद्ध पक्ष के दिनों में पूज्य पिता श्री के संस्मरण अति उत्तम श्रद्धांजलि है। वैसे तो माता पिता कभी भी अपने बच्चों से विलग नहीं होते।उनके द्वारा दी गई शिक्षा , संरक्षण , अनुशासन ही है जो हमें संपूर्ण जीवन मार्गदर्शन करते रहते हैं। एक व्यक्ति के जीवन के प्रथम गुरु तो माता पिता ही होते हैं और उनका दिया गया ज्ञान ही प्राथमिक शिक्षा होती है जिसके आधार पर जीवन की दिशाधारा निर्धारित होती है। हमने पूरी पुस्तिका का अध्ययन किया। आपके जीवन की भी झलक प्राप्त हुई है। **“जब जड़ मजबूत होती है तो वृक्ष का फलना, फूलना और और दूसरों तक उसकी छाया और मीठे फलों से तृप्त कर पाना भी संभव होता है। जो हम सब ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के रुप में देख रहे हैं।”**

पूज्य पिता श्री आदरणीय धर्म पाल त्रिखा जी को हमारी भाव पूर्ण श्रद्धांजलि 🙏



5.चंद्रेश बहादुर जी:

परम् पूज्य गुरुदेव जी एवम् परम बंद नी या माता जी को कोटि कोटि नमन करते हुए डा साहेब सपरिवार को सादर प्रणाम करते हैं ।

सभी आत्मीय को यथोचित अभिवादन अभिनंदन वंदन एवम नमन और साथ ही अनवरत शुभ आशीष।

डा साहेब के पूज्य पिता जी को पितृपक्ष में 65 पृष्ठ रूपी स्मरणांजलि अपने में अप्रतिम, अनुपम, अनमोल, अनुकरणीय, अनुसरणीय, अविस्मरणीय, अकल्पनीय, अकथनीय और अभिनंदनीय इसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

"आज जो हम सभी आत्मीय इस दिव्य परिवार को इस घोर अनुशासनप्रिय, नियमितता, और सद्गुणों के समुच्चय के रूप में देखते हैं, तो निश्चित रूप से उनके

घोर अनुशासनप्रिय पारिवारिक पृष्ठभूमि का ही परिणाम है।”

विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पुत्र होने के बावजूद विद्यालय के दस चक्कर लगाने पड़े। ऐसे ही न जाने कितनी कठोर परीक्षाएं देनी पड़ी।



6. पुष्पा जी :

जय गुरुदेव भाई साहब जी आज मैं आपकी अपने पिताजी के लिए लिखी गई जीवनी और जीवनशैली को पढ़ी और इतनी अच्छी लगी की क्या बताऊं बहुत सारी बातें तो मेरे अपने पिताजी से मेल खाती है जैसे कि -पढाई में अव्वल रहना, बहुत मुश्किल और कम से कम आमदनी में, अपने बच्चों में भी वही सब संस्कार डालने का प्रयास करना। फिर नाटक और रंगमंच से बहुत ही मन से जुड़ना और नाटक लिखना और स्वयं उसे निर्देशित करना और मुख्य भूमिका निभाना ये सारी बातें मेरे पिताजी के साथ भी जुड़ी हुई है, फिर भूत-प्रेतों वाली बात भी।

पिताजी का सामना भी एक बार नाटक देखकर लौटते हुए घर वाले रास्ते में एक दरगाह पर उन्हें खूब बढ़िया प्रोग्राम होता दिखा और वो सोचे की लेट तो हो ही गया है तो यहां का प्रोग्राम भी देख ही लेते हैं तब-तक सुबह भी हो ही जाएगा तब घर चले जाएंगे।

लेकिन वो जैसे ही उसके गेट से अंदर जाने के लिए पैर उठाए उन्हें ऐसा लगा की कोई उन्हें बड़े जोर से पीछे की आओर खींच लिया और बहुत डर लगा वो कांपने लगे और तब उन्हें याद आया कि यहां तो दरगाह है तो ये प्रोग्राम कैसे हो रहा है और खूब बढ़िया सजावट लाईट बत्ती सब कुछ ...और तब वो पूरे दम से दौड़ते हुए घर के तरफ भागे और घर के दरवाजे पर आकर दादी को आवाज लगा कर (बुआ) बेहोश होकर गिर गये थे बाद में उन्होंने होश आने पर ये सारा किस्सा सुनाया और दादाजी का खूब डांट पड़ा।

पिताजी का भी बहुत सारा नाटक वाले ग्रुप का ऐसा ही बहुत सारे फोटो है बहुत तो दीमकों ने खराब कर दिया लेकिन फिर भी कुछ अभी भी है। वो भी फिल्मों के बड़े शौकीन थे और एक फिल्म में काम भी मिला था और

उसकी शूटिंग कलकत्ता में ही हो रहा था लेकिन अचानक ही घर कुछ ऐसी समस्या आ गई की दादाजी ने उन्हें बुला लिया और फिर उन्हें जाने नहीं दिया गया।

पिताजी फिर बिजली विभाग में नौकरी कर लिए जिसमें १००रू से पलामू जिले के डाल्टेनगंज में पहली ज्वाइनिंग हुईं।

उनके सपने फिल्मों में जाने वाला और नाटक कंपनी वाला सब खत्म हो गया,और उनके लिखे नाटकों के कापियों को फ़ाड़ फाड़कर दूध गर्म करने और चाय बनाने का काम लिया जाने लगा

मैं तब बहुत छोटी थी लेकिन जब दादी बुआ लोग उसको जलाती थी तो उनको बहुत ही उदास होकर देखते हुए देखी थी वो सब कापियां भी देखी थी जो कुंआ वाला एरिया जिसमें पूजाघर भी था वहीं अलमीरे पर रखा रहता था और हम बच्चे भी कभी कभी फाड़कर जहाज बनाकर उड़ाया करते थे क्योंकि उस समय उसका महत्व पता नहीं था लेकिन जब थोड़े समझदार हुए तब कुछ बातें स्वयं पिताजी के मुंह से कुछ मां के मुंह और कुछ दादी के द्वार पता चला

तो बहुत ही अफसोस हुआ की कैसे पहले लोग घर की समस्यायों के लिए अपने सपनों को कुर्बान कर दिया करते थे और वही लोग उनको कोई भाव नहीं देते ...

कभी मौका मिला तो घर जाने पर उन फोटो ग्राफस ले आऊंगी

जय गुरुदेव माता जी कोटि-कोटि प्रणाम

आपको कोटि-कोटि धन्यवाद आभार है कि आपने इतने अच्छे से पिताजी की जीवनी को प्रस्तुत कर हम सबके लिए एक मिसाल कायम किया है।



7.आदरणीय संध्या बहिन जी:

आदरणीय डॉक्टर अरुण त्रिखा भाई जी पूज्य पिताश्री धर्मपाल त्रिखा जी को मेरा सादर नमन 🙏🙏🙏🙏

इसमें कोई संदेह नहीं है,इस वर्ष का पितर पक्ष आप एवं आपके परिवार के लिए अद्भुत रहा,एक तो 100 वर्ष बाद सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का एक साथ आने के कारण यह एक दुर्लभ Astronomical घटना थी जिसे ज्योतिषीय दृष्टि से

अद्भुत सन्योग माना गया, ऐसे अद्भुत, दिव्य समय मे अपने पिताश्री के चरणों मे श्रद्धा सुमन "हमारे पिताजी श्री धर्म पाल त्रिखा के जीवन के अविस्मरणीय संस्मरण" शीर्षक से एक 65 पन्नों की लघु पुस्तिका अर्पित करना कोई साधारण बात नहीं है। इसी दिव्य समय मे आपके निवास पर शांतिकुंज से आए ज्योति कलश का अवतरण एक सुखद सन्योग है ऐसे सन्योग गुरु एवं अभिभावकों की अनुकम्पा से ही प्राप्त होते हैं, इन्हें विकसित पात्रता की दरकार होती है फिर ये अनुदान देने मे कृपनता नहीं दिखाते हैं।

आपकी पुस्तिका पढ़ने के बाद कई पाठकों ने प्रोत्साहित होकर अपने माता-पिता पर संस्मरण लिखने की इच्छा जाहिर की है, आपका प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है तभी तो आपकी राह पर अनेकानेक चलना चाहते है। जब आपने प्रथम बार पुस्तिका प्रकाशित की थी मैंने पढ़ी थी, एक एक शब्द आपकी श्रद्धा-निष्ठा से पगा हुआ है,एवं पिताश्री की प्रतिभा को दर्शाता है। पिता पूज्य धर्मपाल जी जैसा पुत्र, आदरणीय अरुण त्रिखा जी जैसा, पिता-पुत्र की

अद्‌भुत जोड़ी ने हम परिजनों का अद्‌भुत मार्गदर्शन किया है। आदरणीय धर्मपाल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, इतनी प्रतिभा एक शख्स मे विरले ही होती है, वह एक योग्य पिता, एक योग्य शिक्षक, एक योग्य प्रधानाचार्य, एक योग्य लेखक, एक योग्य नाटककर्मी,रंगमंच पर सभी पहलु सम्हालने मे सक्षम आश्चर्य होता है, भाई जी। आप पर भी पिता की बहुमुखी प्रतिभा का पूरा प्रभाव पड़ा है, एक तरफ आप विज्ञान से संलग्न रहे किन्तु आध्यात्म पर भी अच्छी पकड़ है, आप लेखक भी हैं औऱ इतने बड़े OGGP के संचालक एवं मार्गदर्शक भी हैं, हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी तीन भाषाओं पर आपकी पकड़ प्रभावित करती है, वर्षो से विदेश मे रहने के बावजूद आप सच्चे भारतीय हैं, एक योग्य पुत्र, एक योग्य पिता, पति, एवं पोतीयों पर प्यार बरसाने वाले दादाजी भी हैं। हम कभी मिले तो नहीं है किंतु जितना जाना समझा है इतना तो दृष्टिगोचर है।

पूज्य पिताश्री को कोटि कोटि सादर नमन 🙏🙏🙏🙏🙏

8. आदरणीय रेणु श्रीवास्तव जी : 

अपने पिता जी के जीवन पर पुस्तक लिखकर सच में त्रिखा भाईजी ने पितृ पक्ष में अपने स्मृति शेष पूज्य पिता को श्रद्धांजलि अर्पित की,बहुत बडा सम्मान है। ऐसे महान पिता के पुत्र होने का गौरव प्राप्त हुआ।उस दिव्य आत्मा के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए हम सभी का शत शत नमन। श्रद्धांजलि स्वरूप पुस्तक लिखकर समर्पित करना कोई सरल कार्य नहीं है। आप जैसे सरल और गुरु को समर्पित पुत्र को पाकर वे भी धन्य हुए।आपके पुस्तक पढ़कर अनेक सहयोगियों को प्रेरणा मिली।पिता के प्रति समर्पण और अपनी भावनाएं व्यक्त करना बहुत बड़ी बात है।आजकल तो बच्चे यह कहते सुना गया है कि आपने कौन सा बड़ा कार्य किया।, इतना तो सभी करते हैं।



9. आदरणीय मंजू मिश्रा जी:

आदरणीय संध्या बहन जी का कमेंट अति उत्कृष्ट है बहन जी की एक एक लाइन में शब्द मै अति सुंदर सत्य हृदय स्पर्शी भाव लिखे हैं परम् पूज्य पिता श्री जी के चरण कमलो मै कोटिशः प्रणाम आज का स्पेशल सेगमेंट पढ़कर हृदय गदगद हो गया आदरणीय अरुण त्रिखा भैया जी को कोटि कोटि प्रणाम है आदरणीय त्रिखा भैया जी के आगे अनायास ही मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है, मैं अपने भाव तो प्रकट नहीं कर पाती लेकिन हृदय में गुरुदेव व माता जी के साथ साथ भैया जी भी हैं। आप सदा स्वस्थ रहे भैया जी अद्भुत लेख के लिए बहुत बहुत आभार भैया जी लिखने मै कोई त्रुटि हो तो कृपया क्षमा करेंगे

Thanks everybody.